उपयोगी अंक

मीडिया मीमांसा के अप्रैल-जून अंक के प्रकाशन के लिए बधाई। अंक का कलेवर और लेखों विषय-वस्तु दोनों ही प्रशंसनीय हैं, नि:संदेह, विषय-वस्तु बहुत ही समृद्ध है और मीडिया से जुड़े लोगों के साथ-साथ अकादमिक-रुचि वालों के लिए भी उपयोगी साबित होगी।

डॉ. विशेष गुप्ता,
एसोसिएट प्रोफेसर,
एम.एच. (पी.जी.) कालोनी, मुरादाबाद

मीडिया की विश्वसनीयता जरूरी

हाल ही में संपन्न लोकसभा चुनाव ने सिद्ध कर दिया है कि मीडिया आज पूर्ण रूप से व्यवसाय बन चुका है। मीडिया लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ है और इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है कि लोकसभा चुनाव में मीडिया ने अपनी अहम् भूमिका का निर्वहन किया है।

चुनाव में मीडिया का रुख सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही रूपों में परिलक्षित होता है। चुनाव में मीडिया ने एक ओर जहाँ मतदान के लिये युवाओं एवं लोगों में जागरूकता फैलाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी वहीं दूसरी ओर समाचार माध्यमों ने राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों से पैसे लेकर खबरें छापी और दिखायीं।

मीडिया मीमांसा ने (जुलाई-सितंबर 2009 अंक) में 'लोकसभा चुनाव में मीडिया की भूमिका' जैसे ज्वलंत मुद्दे पर चर्चा कर वर्तमान मीडिया के वास्तविक स्वरूप से लोगों का अवगत कराया है और यह सोचने पर विवश किया है कि मीडिया में व्यावसायिकता और उपभोक्तावाद क्या उदारीकरण का परिणाम है?

एक समय था जब समाचार-पत्र में संपादक पद के लिए ऐसे संपादकों को निमंत्रित किया जाता था जो वर्षों की सजा के लिये तैयार रहते थे। उर्दू साप्ताहिक 'स्वराज' अखबार के संपादक पद के लिए एक बार जो विज्ञापन छपा था वह इस प्रकार है:-

''स्वराज अखबार के लिये एक ऐसा संपादक चाहिये जिसे दो सूखी रोटियाँ, एक गिलास सादा पानी और हर संपादकीय लेख पर दस वर्ष की सजा मिलेगी।'' यह था समय का जोश और कुर्बानी देने की ललक, परंतु आज यह सब पीछे छूट चुका है और वर्तमान मीडिया व्यावसायिकता एवं उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा देने में जुटा है जिसके लिये कहीं न कहीं हम भी जिम्मेदार हैं। मीडिया मूल्यों में आयी गिरावट सामाजिक मूल्यों में आ रही गिरावट को भी दर्शाता है।

मीडिया का एक गलत कदम जहाँ लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता में विश्वास करने वालों को आघात पहुँचा सकता है, वहीं एक ठोस और सही कदम न केवल स्वस्थ जनमत का निर्माण कर सकता है बल्कि मीडिया की विश्वसनीयता को पुन: स्थापित कर और मजबूत बना सकता है।

स्निग्धा वर्धन
एम.ए.ए.पी.आर. (तृतीय सेमेस्टर)
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार वि.वि.

Two suggestions

The journal MEDIA MIMANSA is well produced and edited properly. I will like to suggest to include first, the history and struggle of one leading regional paper in every issue and second, bringing into focus a few journals led by individual journalists who have been struggling to articulate the social causes.

Nitya Chakraborty
Editor-in-Chief
India Press Agency (IPA)

Brilliant display

Many thanks for sending me a copy of the July-September 2009 issue of your journal Media Mimansa which carries my article on my late father, Durga Dasji. The piece has been displayed brilliantly and made truly memorable. My deep gratitude for it.

Inder Jit
Editor
India News and Feature Alliance (INFA)